''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व व नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन''

नेकराम, शोद्यार्थी शिक्षा, टांट्या विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर
Email : nekramangel@gmail.com

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व व नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण (नैतिकता मापनी) एवं प्रमापीकृत उपकरण व्यक्तित्व मापनी का उपयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, व्यक्तित्व एवं नैतिकता।

प्रस्तावना :–

मानव विकास हेतु शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। शिक्षा ही मानव की मनोवृत्तियों, ज्ञान, अभिरूचि एवं कौशल आदि क्षमताओं का विकास कर मानव को परिस्थितियों के अनुरूप स्वंय को बदलने की शक्ति प्रदान करती है अर्थात् शिक्षा केवल मानव को ज्ञान ही प्रदान नहीं करती है बल्कि उसके व्यवहारों, विचारों, नैतिक गुणों तथा अन्य व्यक्तित्व सम्बनधी कारकों का पूर्णरूपेण विकास करती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा बदलती हुई सामाजिक आकांक्षाओं एवं परिवेश के अनुरूप बालक को ढालने में समर्थ हो जिससे वह विकास के क्रम में अपना योगदान दे सके ताकि भारत में एक ऐसे समाज की स्थापना की जाए जिसमें विभिन्न वर्गों के स्थान पर जनता की प्रधानता हो।

आज के किशोर वर्ग में जिन नैतिक मूल्यों का समावेश होना चाहिए अर्थात् जिन मूल्यों के अभाव में उनके व्यक्तित्व में हिंसा, क्रोध, अनुशासनहीनता, बेइमानी, बड़ों का अपमान, जिम्मेदारियों से अनजान, झूठ, निर्दयता आदि आचरण दिखाई पड़ते हैं, उनके निराकरण हेतु सबसे बड़ा उपकरण शिक्षा है। शिक्षा मानव को एक शिष्ट सभ्य आदमी बनाकर राष्ट्र के निर्माण में एक जिम्मेदारपूर्ण नागरिक तैयार करती है। आज के किशोर ही राष्ट्र के भावी निर्माता हैं।

नैतिकता :–

नैतिक मूल्य का आशय उन मूल्यों से है जो अच्छे कार्यों, शु(एवं पवित्र आचरण तथा समाज द्वारा स्वीकृत नैतिक मानदण्डों के आधार पर किए गए व्यवहार से सम्बन्धित है। शिक्षा में ऐसे नैतिक मूल्यों का बहुत महत्व है। नैतिक मूल्यों के विकास से व्यक्ति की योग्यताओं और क्षमताओं को इस प्रकार विकसित किया जा सकता है कि वह समाज, समुदाय एवं समस्त मानवों के साथ उचित ढंग से व्यवहार करे।

व्यक्तित्व :–

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के शब्द 'पर्सनेलिटी' से हुई है जो लेटिन भाषा के च्मतेवदं से बना है जिसका अर्थ नाटकीय पोशाक तथा मुखौटा से है अर्थात् व्यक्तित्व का अर्थ बाहय शारीरिक आकृति से है। यह बात सार्थक नहीं है क्योंकि बाहरी आकृति से व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन नहीं किया जा सकता है अपितु उसके आन्तरिक गुणों का होना भी आवश्यक है। व्यक्तित्व में वे सभी मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं जो गतिशील संगठन से व्यक्ति पर प्रभाव डालती है। व्यक्तित्व शीलगुणों का समन्वित रूप है जो व्यक्ति के समायोजन को वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों में निर्धारित करता है। दूसरे शब्दों में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनुकूलन करता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण एक अच्छे व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। एक अच्छे नागरिक के व्यक्तित्व तथा उसके नैतिक आचरण का राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक राष्ट्र अपने सुशिक्षित व सुसंस्कृत नागरिकों के बल पर विकास की ओर अग्रसर होता है। अतः आज का किशोर वर्ग राष्ट्र का भावी निर्माता है, परन्तु आज के किशारे वर्ग में नैतिक मूल्यों का हनन होता जा रहा है। आज के किशोर वर्ग में हिंसा, क्रोध, बड़ों के प्रति सम्मान का अभाव, जिम्मेदारियों से दूर जाना आदि प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। इस शोध अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किशोर वर्ग के व्यक्तित्व में इस प्रकार के प्रभावों का क्या कारण है? उनके नैतिक मूल्य क्यों खत्म होते जा रहे हैं?

शोध के अध्ययन से किशोर वर्ग में पनप रहे अनैतिक मूल्यों को दूर करने के सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे व उनको नैतिक शिक्षा की महत्वता बनायी जाएगी, जिससे उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली बनेगा।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व व नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं –

1. अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को श्रीगंगानगर जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. इस शोध अध्ययन के अन्तर्गत 120 किशोर बालक–बालिकाओं को लिया गया है।
3. सम्बन्धित शोध अध्ययन को केवल किशोर बालक–बालिकाओं तक सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक किशोर बालक–बालिकाओं को लेकर अध्ययन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत किशोर बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व व नैतिकता का अध्ययन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. प्रस्तुत शोध में राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के 120 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है
2. प्रस्तुत शोध में 60 अल्पसंख्यक वर्ग के व 60 बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों को चयनित किय गया है।
3. प्रस्तुत शोध में 60 अल्पसंख्यक वर्ग के किशोरों में से 30 किशोर बालकों एवं 30 किशोर बालिकाओं को चयनित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में 60 बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों में से 30 किशोर बालकों एवं 30 किशोर बालिकाओं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. व्यक्तित्व परीक्षण – आइजेस्क (प्रमापीकृत)।
2. प्रश्नावली उपकरण – (अप्रमापीकृत)।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विष्लेषण :–

<u>सारणी संख्या 1</u> अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	प्रमापीकृत त्रुटि विचलन	टी मूल्य	परिणाम
1.	अल्पसंख्यक	60	75.835	9.14	1.813	0.137	स्वीकृत
2.	बहुसंख्यक	60	75.584	10.665			

df = N1 + N2 - 2 = 60 + 60 - 2 = 118 0.01 = 2.62, 0.05 = 1.98

व्याख्या :–

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 75.835 तथा 75.584 है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.14 तथा 10.665 है। गणना से प्राप्त टी–मूल्य 0.137, स्वतंत्रता के अंश 118 के अनुसार 0.05 स्तर पर 1.98 से कम प्राप्त हुआ है।

अतः स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः इस आधार पर यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

<u>सारणी संख्या 2</u> अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	प्रमापीकृत त्रुटि विचलन	टी मूल्य	परिणाम
1.	अल्पसंख्यक	60	26.83	2.328	0.451	2.882	अस्वीकृत
2.	बहुसंख्यक	60	25.5	2.618			

df = N1 + N2 - 2 = 60 + 60 - 2 = 118 0.01 = 2.62, 0.05 = 1.98

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या :–

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के नैतिकता परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 26.83 तथा 25.5 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.328 तथा 2.618 है। गणना से प्राप्त टी–मूल्य 2.882, स्वतंत्रता के अंश 118 के अनुसार 0.05 स्तर पर 1.98 से कम प्राप्त हुआ है तथा 0.01 स्तर पर 262 से भी ज्यादा प्राप्त हुआ है। अतः दोनों ही स्तरों (0.05 व 0.01) पर नैतिकता परीक्षण के टी मूल्य का मान ज्यादा प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता में कोई सार्थक अन्तर है। अतः इस आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :–

परिकल्पना 1 :–

''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है।''

निष्कर्ष :–

परिकल्पना सं. 1 को स्वीकार किया जाता है क्योंकि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 2 :–

''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता में सार्थक अन्तर नहीं है।''

निष्कर्ष :–

परिकल्पना सं. 2 को अस्वीकार किया जाता है क्योंकि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के किशोरों की नैतिकता में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, डॉ. आर.पी. एवं भटनागर, डॉ. मीनाक्षी (2007) : ''शिक्षा अनुसंधान'', लायल बुक डिपो, मेरठ
2. मेहता, डी.डी. (2009) : ''शैक्षिक मनोविज्ञान अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान'', टण्डन पब्लिकेशन्स, लुधियाना
3. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
4. पाण्डे, के.पी. (2007) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दोआबा हाऊस प्रकाशन, नई दिल्ली
5. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. कोल, लोकेश (2006) : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली
7. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2008) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.एल. बुक डिपो, मेरठ
8. सरीन, डॉ. शशिकला (2007) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
9. अस्थाना, विपिन (2004) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY